

## अध्याय 1

### झूला

#### प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

बताओ, इनमें किन चीजों पर तुम झूले की तरह झूल सकते हो?



टायर



फाटक



झाड़ू



दरी



मेज़



डाली



पैर वाला झूला



अलमारी

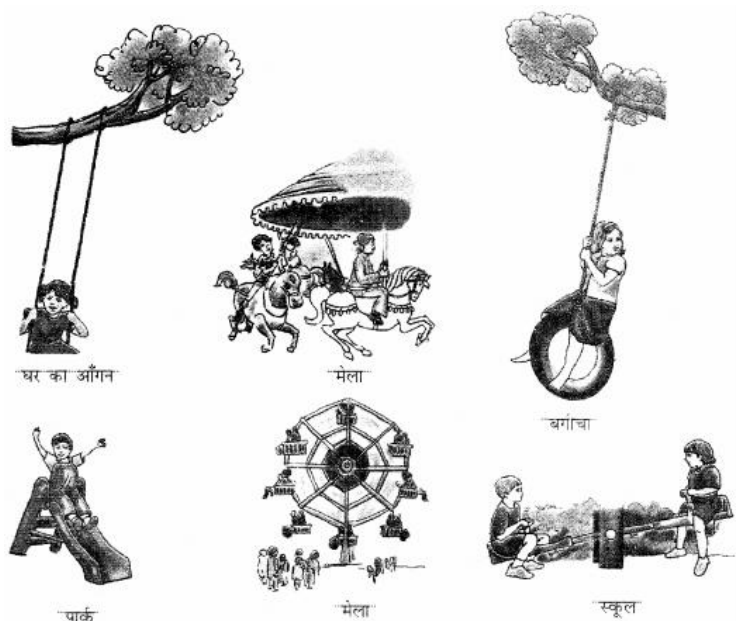
उत्तर :

टायर, फाटक, पैरवाला झूला, डाली।  
मुझे पैरवाले झूले पर झूलने में मजा आता है।  
मुझे डाली पर झूलने में डर लगता है।  
मुझे फाटक पर झूलने पर डाँट पड़ती है।

प्रश्न 2.

तुम इन झूलों पर भी झूले होगे। इन झूलों को तुमने कहाँ-कहाँ देखा है?  
मेला स्कूल पार्क घर का आँगन बगीचा

उत्तर :



प्रश्न 3.

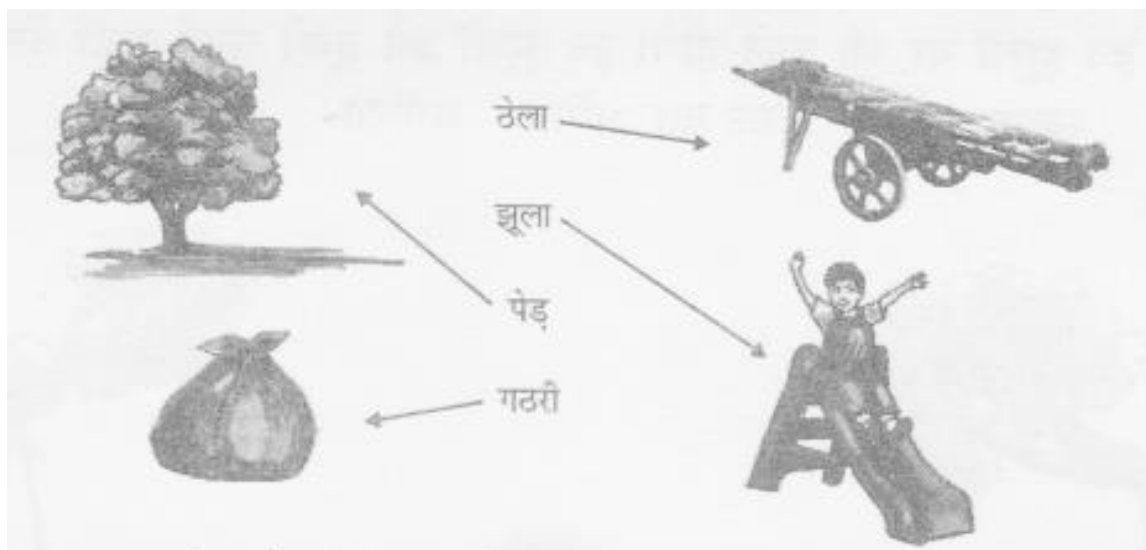
झूले से सुहानी को क्या-क्या दिख रहा होगा?

उत्तर :

लड़का, लड़की, गिलहरी, फूल, तितलियाँ, चिड़िया, कुत्ता, खरगोश, गेंद, चूहा।



मिलाओ



प्रश्न 4.

खाली जगह भरो और फिर छुपने की इन जगहों पर बच्चों के चित्र बनाओ।

उत्तर :



पेड़ के पीछे



मेज के नीचे



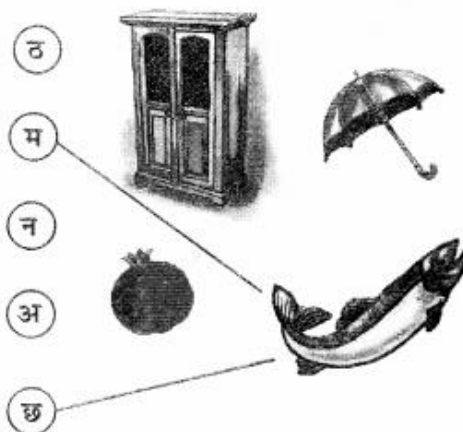
चारपाई के नीचे



झाड़ी के पीछे

नोट-बच्चों के चित्र विद्यार्थी स्वयं बनाएँ।

पकड़न-पकड़ाई



### प्रश्न 5.

ऊपर बनी चीजों के नाम उन अक्षरों के नीचे लिखो जो उनमें आते हैं।

उत्तर :

ठ	छ	म	अ	न
ठेला गठरी	मछली छाता	मछली अलमारी	अनार अलमारी	नल, नाव अनार

### प्रश्न 6.

यहाँ मछली दो बार लिखा गया है। क्या किसी और चीज़ का नाम भी तुमने दो बार लिखा है?

उत्तर :

“हाँ अलमारी और अनार के नाम दो बार लिखे गए हैं।

## चार अंक के प्रश्न और उत्तर

**प्रश्न 1:** बच्चा ने अपनी माँ से कैसे एक झूला मांगा और उसने उसका कैसे इस्तेमाल किया?

**उत्तर :** बच्चा ने अपनी माँ से एक झूला मांगा जिसे वह अपने लिए इस्तेमाल करना चाहता था। उसने कहा कि वह झूले पर बैठकर ऊपर उड़कर आसमान को छूना चाहता है। वह इसे अपनी कल्पना के साथ जुड़ाते हुए दिल्ली से कलकत्ता जैसे विभिन्न स्थानों की सैर करता है। झूले के माध्यम से उसे ऐसा अनुभव होता है कि वह नीचे की धरती भी उसके साथ झूल रही है।

**प्रश्न 2:** बच्चे को झूलने का अनुभव कैसा लगा और वह इसके माध्यम से कौन-कौन सी स्थानों की सैर करता है?

**उत्तर :** बच्चे को झूलने का अनुभव बहुत ही मजेदार और रोमांटिक लगता है। वह झूले पर बैठकर अपनी कल्पना में दिल्ली और कलकत्ता जैसे स्थानों की सैर करता है। झूला उसे ऐसा अहसास कराता है कि वह नीचे की धरती भी उसके साथ झूल रही है।

**प्रश्न 3: बच्चे की कल्पना में वर्षा और बादलों के दल को लूटने का विवेचन कैसे है?**

**उत्तर :** बच्चे की कल्पना में वह झूला पर बैठकर रिमझिम बरसात के मौसम में बादलों के दल को लूटने का विचार कर रहा है। यह उसकी कल्पना में एक रोमांटिक और सुंदर सैर का सीन है, जहां वह ऊपर उड़कर बादलों के साथ खेलता है।

**प्रश्न 4: इस कविता में झूले का सांगीतिक और छंदों का उपयोग कैसे हुआ है?**

**उत्तर :** इस कविता में झूले का सांगीतिक और छंदों का उपयोग भावनाओं को सुंदरता से प्रकट करने के लिए किया गया है। शब्दों का चयन और उनका व्याकरण सुन्दर और सांगीतिक है, जिससे पाठकों को एक सुखद और रोमांटिक अनुभव होता है।

## सात अंक के प्रश्न और उत्तर

**प्रश्न 1: कविता में झूले का सांगीतिक और छंदों का उपयोग कैसे हुआ है?**

**उत्तर :** कविता में झूले का सांगीतिक और छंदों का उपयोग बहुत ही कुशलता से किया गया है। सांगीतिक भाषा के माध्यम से कवि ने झूलने के अनुभव को रोमांटिकता और सुखदता से बढ़ाया है। छंदों का उपयोग ने कविता को गति और सुस्ती से भरा हुआ बनाया है, जिससे पाठकों को एक सुखद और आत्मरंजन भरा अनुभव होता है।

**प्रश्न 2: बच्चे के झूलने के अनुभव का वर्णन करें और उसने इसे कैसे अपनी कल्पना से जोड़ा?**

**उत्तर :** बच्चे को झूलने का अनुभव बहुत ही सुखद और रोमांटिक होता है। वह झूले पर बैठकर अपनी कल्पना में दिल्ली से कलकत्ता जैसे स्थानों की सैर

करता है और इसे उच्चतम स्थानों तक पहुंचने का अनुभव करता है। झूला उसे ऐसा अहसास कराता है कि वह नीचे की धरती भी उसके साथ झूल रही है। उसकी कल्पना में, वह बरसात के मौसम में झूला झूलकर बादलों के साथ खेलता है और उनको लूटने का सपना देखता है।

**प्रश्न 3: इस कविता में बच्चे की कल्पना और झूलने के अनुभव को व्यक्त करने के लिए कैसे भाषा का उपयोग किया गया है?**

**उत्तर :** कविता में बच्चे की कल्पना और झूलने के अनुभव को व्यक्त करने के लिए भाषा का उपयोग बहुत ही सुंदरता से हुआ है। शब्दों का चयन और उनका व्याकरण सांगीतिक हैं, जिससे पाठकों को विशेष भावनाओं और छाया-छवि का अनुभव होता है। भाषा ने बच्चे की उम्रदराज की नयी-नयी कल्पनाओं को जीवंत करने में सहायक होती है और उसके झूलने के अनुभव को रोमांटिक और सुखद बनाती है।

## कविता का सारांश

बच्चा अपनी माँ से कहता है कि वह उसके लिए एक झूला लगवा दे। बच्चा कहता है कि मैं इस पर झूलूंगा। झूले पर बैठकर और ऊपर बढ़कर आसमान को छू लूंगा।” कवि कहता है कि पेड़-पौधों की डालियाँ झूले की तरह झूल रही हैं। पत्ते-पत्ते तक झूल रहे हैं।

बच्चा सोचता है कि इस झूले पर झूलने में कितने मजे हैं। झूले पर बैठकर झूलते हुए वह कल्पना-लोक में कभी दिल्ली तो कभी कलकत्ता की सैर कर आता है। झूले में झूलते बच्चे को ऐसा प्रतीत हो रहा है, जैसे उसके झूले के साथ-साथ नीचे की धरती भी झूला झूल रही है। बच्चा झूले से और ऊपर उड़ने के लिए कहता है। रिमझिम-रिमझिम वर्षा हो रही है। झूले पर बैठे बच्चे के मन में आसमान पर उमड़ते-घुमड़ते बादलों के दल को लूटने के विचार आ रहे हैं।

**शब्दार्थ :** अम्मा-माँ। झूला-पेड़ या छत आदि से लटकाई हुई रस्सियाँ, जिन पर बैठकर झूलते हैं। आसमान-आकाश। डाली-पेड़-पौधे की टहनी।

**प्रसंग –** प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक रिमझिम, भाग-1 में संकलित कविता ‘झूली’ से ली गई हैं। इस कविता के कवि रामसिंहासन सहाय ‘मधुर’ हैं। इसमें कवि ने एक छोटे बच्चे के मनोभावों को बड़े ही सुंदर ढंग से दर्शाया है।

**व्याख्या –** उपर्युक्त पंक्तियों में एक बच्चा अपनी माँ से अपने लिए झूला लगाने को कह रहा है। बच्चा अपनी माँ से कह रहा है कि वह उसके लिए एक झूला लगा दे, ताकि वह उस पर चढ़कर और ऊपर उठकर आसमान को छू सके।

झूले के साथ पेड़-पौधे की डालियाँ तथा पत्ते भी झूल रहे हैं। झूले पर बैठकर आनंदित होता बच्चा अपनी कल्पना की उड़ान में झूले को दिल्ली और कलकत्ता ले चलने की बात करता है।